राष्ट्रोपनिषत्

रचयिता
आचार्य डॉ. नारायणशास्त्री काङ्कर विद्यालङ्कार
(महामहिम-राष्ट्रपति-सम्मानित)

हिन्दी-रूपान्तरण-कर्त्री
सौ. श्रीमती इन्दु शर्मा
एम.ए., शिक्षाचार्या

अंग्रेजी-रूपान्तरण-कर्त्ता
महामण्डलेश्वरः स्वामी श्री ज्ञानेश्वरपुरी
विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थानम्, जयपुरम्

अत्र प्रस्तर-दोषः कः,पादे चेत् हन्यते ततः ।
मनुष्य एव दोषी यो, वीक्षते तं चलन्नहि ॥८॥

इसमें पत्थर का क्या दोष है ? यदि उससे पैर में चोट लग जाती है। मनुष्य ही दोषी है, जो चलता हुआ उस पत्थर को नहीं देखता है।

If the foot is hurt by the stone where it is a fault the stone? It is the person's fault who did not see it while walking.

अदण्ड्यो यदि दण्ड्येत, दण्ड्यश्च नैव दण्ड्यते ।
तर्हि परिणतिर्नास्य, सुखदा दुःखदैव हि ॥९॥

यदि अदण्डनीय को दण्डित किया जाय और दण्डनीय को दण्डित नहीं किया जाता है, तो इसका परिणाम सुखदायक नहीं होता, दुःखदायक ही होता है।

If the innocent are punished and not guilty, the result will not be prosperity but tragedy.

अद्वैत-भावना यावद् , नोत्पन्ना भवति क्वचित् ।
सुखं दुःखं परेषां हि, तावत् स्ववन्न बुध्यते ॥१०॥

जब तक कहीं अद्वैत भावना उत्पन्न नहीं होती है, तब तक अपनी तरह दूसरों का सुख दुःख नहीं जाना जाता है।

Till there is no feeling of equality, one will feel neither the pain nor happiness of others.

अधिकारं सुलभ्यापि, क्षेत्रं स्वं न विकास्यते ।
अधिकारो वृथा तर्हि, छागस्तन इवास्ति सः ॥११॥

अधिकार सुलभ करके भी अपना क्षेत्र यदि विकसित नहीं किया जाता है, तो वह अधिकार तो बकरी के स्तन की भाँति व्यर्थ ही है।

If the Authority does not improve its own are a then this authority is as useful as the breasts of a male goat.

अनर्थानां तु सर्वेषां, छिद्रमेवास्ति कारणम् ।
छिद्रे पूर्णेऽवकाशोऽपि , नाऽनर्थेभ्योऽवशिष्यते ॥१२॥

सारे अनर्थों का कारण तो छिद्र ही हुआ करता है । छिद्र को भर लेने पर अनर्थों के लिए अवकाश भी नहीं रहता है।

The cause of all disasters is a hole (defect). After filling the hole, there is no place even for the disasters.

अनायासेन सुज्ञेयं, यद् भवेद् लेखनं क्वचित् ।
तदवश्यं भवत्येव, प्रशस्तं चाभिनन्दितम् ॥१३॥

जो लेखन बिना कठिनाई के आसानी से समझ में आ जाने वाला होता है,वह लेखन अवश्य ही प्रशंसनीय और अभिनन्दनीय होता है ।

That writing is praiseworthy and applaudable, which is easily written without any difficulty and is on time.

अनुकूलं भवेत् तन्न, कार्यं कुत्रापि किञ्चन ।
यस्य सम्पादनं न स्याद्, यथाकालं यथाविधि ॥१४॥

वह कार्य कहीं भी कुछ अनुकूल फल नहीं देता है, जिसका सम्पादन उचित समय पर उचित विधि से नहीं किया जाता है।

The work that is not carried out in a given time and a proper manner will not bear proper fruits anywhere.